C-4, सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा

यूनिट - 5

व्याख्यात्मक पाठ्यसामग्री: रणनीतियाँ एवं समझ

पाठ्यसामग्री से आशय उन शिक्षण सामग्रियों से है जिसके माध्यम से शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है, जो शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया का आधार होती है। व्याख्या पाठ्यवस्तु या पाठ्यपुस्तक के ऐसे अध्ययन से है जिसमें विषयवस्तु का गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन किया जाए, तथा पाठ्यसामग्री के विभिन्न संदर्भों से अधिगमकर्ता परिचित हो सके। अध्ययन - अध्यापन की समूची प्रक्रिया में विषय-वस्तु की समग्र जानकारी के साथ - साथ भाषाई कौशलों के विकास का प्रयास भी चलता रहता है, जिसमें नवीन शब्दों से परिचय, एवं उनकी वृद्धि, शब्द एवं वाक्य निर्माण की क्षमता, पठन एवं लेखन तथा श्रवण कौशल के विकास के साथ - साथ विचारों एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति क्षमता का विकास भी महत्वपूर्ण होता है।

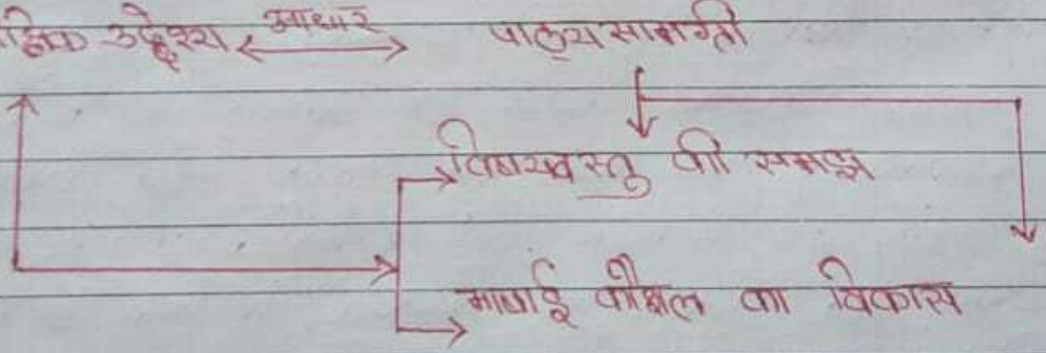

पाठ्यसामग्री → के प्रति

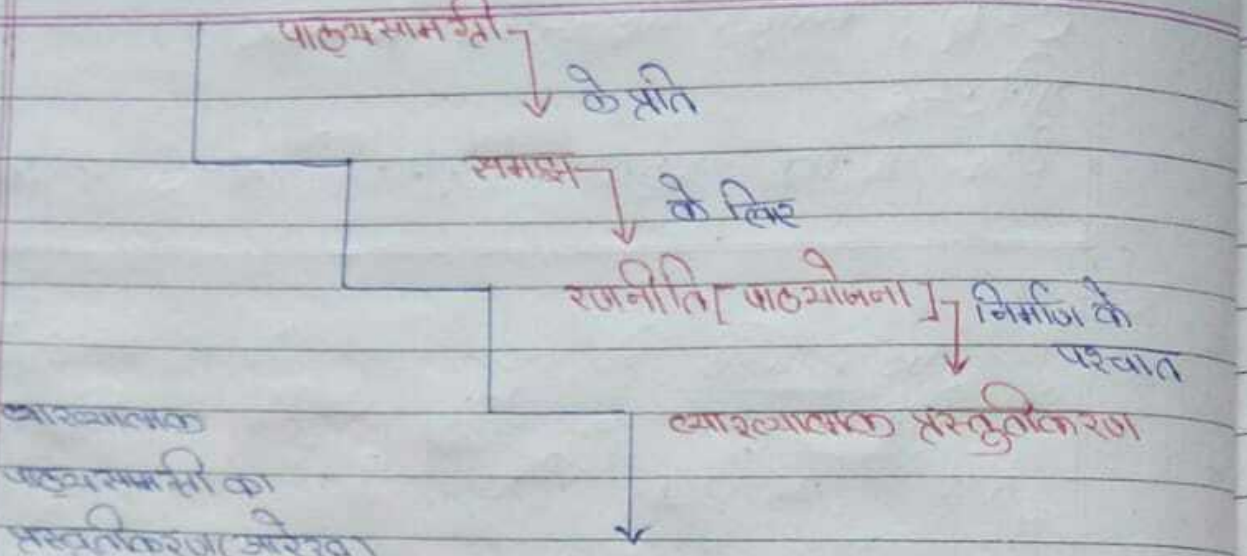

समझ → के लिए

रणनीति [पाठयोजना] → निर्माण के पश्चात

व्याख्यात्मक प्रस्तुतिकरण

व्याख्यात्मक पाठ्यसामग्री का प्रस्तुतिकरण (आरेख)

चरणबद्ध प्रक्रिया

किसी विषय की पूर्ण एवं गहन समझ के लिए उसके मूल तक पहुँचना अत्यंत आवश्यक है। आगे गंतव्य तक पहुँचने के लिए एक सीढ़ी पार करने के पश्चात ही हम अगले सीढ़ी तक पहुँच सकते हैं और प्रत्येक सीढ़ी एक दूसरे से संबंधित है। ठीक उसी प्रकार इस सीढ़ीनुमा क्रम में प्रत्येक अध्याय एक-दूसरे से पूर्णतः संबंधित है। एक को प्राप्त करने के पश्चात ही हम अगले क्रम तक पहुँच सकते हैं। पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतिकरण के पूर्व अध्यापक उसके प्रति समझ विकसित करने का प्रयास करते हैं ताकि विषयवस्तु को जान एवं समझ सकें। तत्पश्चात उसके प्रस्तुतिकरण की रणनीति बनाई जाती है जिसे पूर्व योजना/पाठ योजना के नाम से संबोधित किया जाता है। जिसमें कार्यबिंदु (कक्षा की) अवबोध में —

कब-?

↓

क्या-?

↓

कैसे-?

आदि की स्पष्टता हो जाती है।

पाठ योजना की आवश्यकता एवं उपयोगिता को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

(1) अध्यापक की तैयारी
(2) प्रस्तुतीकरण से पूर्व अभ्यास
(3) क्रमबद्ध प्रस्तुति
(4) क्या करना है पूर्वनिर्धारित (भ्रम न होना)
(5) प्रस्तुतीकरण की कठिनाइयों का पूर्व आभास